Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

विद्यापति आ हुनक रचना संसार

डॉ. श्रवण कुमार
ओल्ड पी.जी. कैम्पस, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

Article Info
Volume 6, Issue 1
Page Number : 09-16

Publication Issue :
March-April-2023

Article History
Accepted : 10 Feb 2023
Published : 05 March 2023

सारांश - मिथिला विभूति आ बिहारक गौरव विद्यापतिक बहुआयामी व्यक्तित्व संपूर्ण भारतीय परिवेश मे विद्वान आ आमजन के बीच विचारणीय रहल अछि। विद्यापति कविक–कवि मानल जाइत छथि। ओ नीतिशास्त्री, परंपरावादी छलाह किन्तु यथार्थवादी आ सुधार–वादियो छलाह। विद्यापति संस्कृत, अवहट्ट, मैथिली एहि भाषा मे रचना कयने छलाह। हुनक रचना सँ बंगाल, उड़ीसा, आसाम, नेपाल प्रभावित छल। विद्यापति कैँ कोनो सीमा मे बाँन्हि कऽ आंकलित करबाक अर्थ होयत जे विद्या के विद्यापति सँ अलग करब। शृंगार रस होइ या भक्ति रस, नीतिशास्त्र होइ या दार्शनिक चिंतन आम लोकक संदर्भ मे विद्यापति एहि सब क्षेत्र मे भारतीय जनमानस के प्रभावित कयलनि।

विद्यापतिक समय राजनीति आ सांस्कृतिक दृष्टि सँ संक्रमणक समय छल। मुस्लिम शासक वर्गक प्रभावक कारणैँ राजनीति, समाजिक आ अर्थव्यवस्थाक क्षेत्र मे व्यापक परिवर्तन भऽ रहल छल। हिंदू–इस्लामी संस्कृतिक प्रभाव बढ़ि रहल छल। विद्यापति एहि सभ सामाजिक विरोधपूर्ण परिस्थितिसँ अवगत छलाह। ओ राजा, सामंत आ आम लोग सभक बात कयलनि। विद्यापति जतेक सत्ताक करीब छलाह ओतने आमलोकक नजदीक सेहो छलाह। ओ आइयो समाजक सब वर्गक बीच लोकप्रिय छथि।

बंगाल, बिहार एक समय मे बौद्धिक परिचर्याक प्रमुख स्थल छल। वस्तुतः नदिया विश्वविद्यालयक प्रादुर्भाव सँ पूर्व बंगाल विद्वान सभ स्मृतिशास्त्र, नव्यन्याय आ मीमांसा पढ़बाक लेल मिथिला आबैत–जाइत रहैत छलाह। संस्कृत विद्याक साथे–साथ महाकवि विद्यापतिक वैष्णव भक्ति पदावली सेहो बंगाल पहुँचल। चौतन्य विद्यापति सँ प्रभावित छलाह। चैतन्यक चरित्रामृत सँ स्पष्ट अछि जे ओ विद्यापति आ चंडीदासक भक्ति गीत सँ अधिक प्रभावित छलाह :–

"विद्यापति चंडीदास श्री गीतगोविंदम एइतिनगी तेकरे प्रमुख आनन्द"

वैष्णव संतक प्रभावक कारणैँ विद्यापति बंगला साहित्यक अंग बनि गेलाह। कृष्णदास, नरोत्तमदास, ज्ञानदास, राजशेखर, नरहरिदास, गोविंददास सभ गोटे विद्यापतिक अनुकरण कयलाह। विद्यापतिक पदावली बंग्ला मे एते बेसी लोकप्रिय छल जे लोग हुनका बंगलाक कवि मानय लागल। सभ सँ पहिले जॉन बीम्स सन 1873 ई. मे ई विचार व्यक्त कयलनि जे विद्यापति बंगालक नदिया जिलाक निवासी छलाह। बंगाली परंपराक अनुसार हिनक असली नाम बसंत राय आ पिताक नाम भवानंद राय छल आ हुनक जन्मभूमि बंगालक यशोहर जिलाक वर्णाटोर ग्राम मे बताओल गेल छल। बीम्सक विचार भ्रामक छल। 1875 ई. मे पिंडारूछ (दरभंगा) सँ मिलल ताम्रपत्र सँ सिद्ध भेल कि विद्यापतिक असली नाम विद्यापतिये छल आ हुनक जन्मभूमि बंगाल

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

नहि बल्कि वर्तमान मधुबनी जिला बिस्फी ग्राम छल। एहि ग्राम के ओ अपन प्रिय शासक महाराज शिव सिंह सँ प्राप्त कयने छलाह। ई उपर्युक्त विचार राखयबाला श्री रामकृष्ण मुखोपाध्याय पहिल बंगाली विद्वान छलाह। बीम्सो हिनक विचार मानबाक लेल बाध्य भेलाह। सन 1881 मे प्रसिद्ध भाषाविद् अब्राहम ग्रियर्सन 'पंजी–प्रबंध' आधार पर विद्यापतिक पूर्वजक नाम 'मैथिल क्रिष्टोमैथी'क नाम सँ प्रकाशित कयलाह। ग्रियर्सनक विचार के म. म. हर प्रसाद शास्त्री, जस्टिस शारदा चरण मिश्र, वीरमेश दत्त, श्री नरेंद्र लाल गुप्त जेहन विद्वान सभ स्वीकार कयलनि। एहि प्रकारेँ हिनक जन्म संबंधी विवाद समाप्त भेल। सभ गोटे स्वीकार कयलनि जे विद्यापति मिथिलाक बिस्फी गामक निवासी छलाह। विद्यापतिक एक टा पंक्ति एकर स्वयं एक टा अकाट्य प्रमाण सेहो अछि–

"पंचगौड़ाधिप शिवसिंह भूप कृपा करि लेले निन पास।
बिस्फी ग्राम दान कएला मोहि रह इत राज सनिधाम।।"

कमोबेश ई कहि सकै छी जे विद्यापति 15म शताब्दीक छलाह। विद्वान सभ विद्यापतिक जन्मतिथि सुलझेबाक प्रयास कयलनि। सतीश चंद्र राय हिनक जन्मतिथि 1380 ई., डॉ. राही दुल्ला 1390, म. म. परमेश्वर झा 1374, शिव नंदन ठाकुर 1334, आ विमान बिहारी मजूमदार 1380 ई. मानैत छथि। मिथिलाक ख्याति प्राप्त विद्वान म. म. उमेश मिश्र, डॉ जयकांत मिश्र हिनक जन्म काल 1360 ई., डॉ सुभद्रझा, खगेन्द्र नाथ मिश्र आ विमान बिहारी मजूमदार विद्यापतिक जन्म 1380–1460 ई. मानै छथि। रमानाथ झा लिखने छथि– विद्यापतिक जन्म 1350 ई मे बिस्फी मे भेल छल। एहि सँ स्पष्ट अछि कि विद्यापतिक वास्तविक जन्मतिथिक बारे मे विद्वान सभक बीच मतभेद अछि। मिथिला मे प्रचलित परंपरा अनुसार विद्यापति 1360 ई. सँ 1477 ई.क बीच जीवित छलाह। ग्रियर्सन सेहो मानै छलथि जे विद्यापति 15म शताब्दीक प्रारंभ मे जीवित छलाह।

विद्यापति एहन परिवारक सदस्य छलाह जे पछिला चारि–पाँच शताब्दी सँ मिथिलाक बौद्धिक नेतृत्व दैत रहल छथि। हिनक परिवार धर्म शास्त्रीय ज्ञान क्षेत्र मे अपन विशिष्ट पहचान बना चुकल छलाह। हिनक परिवार मे मंत्री छलाह कर्मादित्य भावादित्य, वीरेश्वर आ चंडेश्वर। हिनक पिता गणपति ठाकुर छलाह। बचपने सँ विद्यापति कुशाग्र बुद्धि सँ युक्त छलाह। महामहोपाध्याय हरि मिश्र विद्यापतिक अध्यापक छलाह आ म. म. पक्षधर मिश्र हिनक सहपाठी।

विद्यापति अपन पिताक संग राजा गणेश्वरक दरबार मे आबैत–जाइत छलाह। राजा गणेश्वरक बाद कीर्ति सिंह राजा बनलाह। विद्यापति राजा कीर्ति सिंहक दरबारक सदस्य छलाह। मध्यकाल राजनीतिक आ सामाजिक दृष्टिकोण सँ संक्रमणक युग छल। राजनीतिक परिवर्तन अर्थव्यवस्था, समाज आ संस्कृति के प्रभावित कऽ रहल छल। विद्यापति एहि सब तथ्य सँ परिचित छलाह। ओ समकालीन परिस्थितिक अनुरूप कतेको क्षेत्र मे योगदान देलाह। विद्यापतिक अधिकांश जीवनकाल राजाश्रय मे बीतल। ओइनिवार वंशक शासक हिनक आश्रयदाता छलाह। कीर्तिलता मे विद्यापति बड़ गर्व सँ कहने छथि–

"ओइनि वंश प्रसिद्ध जग कर दूर सेव।
दुहू एक्कल न पाविअइ गुअबई अरू भूदेव।।"

विद्यापति अपन रचना मे ओइनिवार वंशक शासकक जिक्र त केनहि छथि साथहिं हुनका प्रति आदरभाव सेहो समर्पित कयने छथि। कीर्ति सिंह, भव सिंह, देव सिंह, पद्म सिंह आ कतेकोक जिक्र हिनक रचना मे स्पष्ट भेल अछि।

विद्यापतिक युग संक्रमणक युग छल। ई स्वाभाविके छल जाहि सँ हुनका अनेको दिस ध्यान आकृष्ट करय पड़लैन। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक सब पक्ष पर हिनका ध्यान छलनि आ ताहि रूपे रचना कयलनि। ताहि कारणेँ विद्यापति के 'संधि कवि' सेहो मानल जाइत अछि। एक एम्हर ओ शास्त्र निर्माण करैत छलथि त दोसर एम्हर 'बेसिल बयना' पर ओतबे

अधिकार राखैत छलथि। विद्यापति साहित्यकार, संगीतकार आ लोक भाषा मैथिलीक प्रकांड विद्वान छलाह। संगहिं ओ ओइनवंशक इतिहासकारक रूप मे सेहो जानल जाइत छथि।

विद्यापति मैथिल ब्राह्मण छलाह। श्रुति, स्मृति, इतिहास, पुराण, दर्शनशास्त्र, राज्य सिद्धांत आदि सब विषय के विद्यापति आ हुनक पूर्वज ख्याति प्राप्त विद्वान छलाह। ओइनवार वंशक प्रभावे ओ कतेको ग्रंथक रचना कयलाह। सबसँ बेसी रचना ओ संस्कृत मे कयलाह जे बहुतो विषयक छल जेना– धर्मशास्त्र, विधिशास्त्र, नीतिशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, भू–परिक्रमा, पुरुषपरीक्षा, लिखनावली, दुर्गाभक्तितरंगिणी, विभागसार आदि पुस्तकं कीर्तिलता आ कीर्तिपताका अबहट्ठ देसी भाषा मे अछि। विद्यापतिक पदावली मैथिली भाषा मे अछि।

कीर्तिलता मे विद्यापति कीर्तिसिंहक वीरताक उल्लेख कयने छथि। ओहि मे ओइनवार वंशक शासक कीर्तिसिंह आ वीरसिंहक संबंधित कथा अछि। कीर्तिलता बिहार आ जौनपुरक बीच राजनीतिक आ सांस्कृतिक संबंध पर प्रकाश दैत अछि। कीर्ति लता मध्यकाल मे व्याप्त नैतिक पतन सँ संबंधित तथ्य के सेहो उजागर करेत अछि। शर्की राजवंशक राजधानी जौनपुर ओ ओतुका शासकक आक्रमकक वर्णन सेहो एहि मे कयल गेल अछि। मध्यकालीन नगर, सैनिक व्यवस्थाक अतिरिक्त प्रकृति आ पर्यावरण सँ संबंधित जानकारी सेहो एहि पुस्तक मे देल गेल अछि। उदाहरणस्वरुप बगीचा, पुल, बांध, पोखरि आ जौनपुरक वेश्या सभक वर्णन अछि। आदिकालक गद्य परंपरा मे लिखल ई उत्कृष्ट रचना मानल जाइत अछि। कीर्तिलता मे कीर्ति सिंहक दानशीलताक प्रशंसा अछि। वीरपुरुषक लक्षण बताइोल गेल अछि। पुरुषत्व (पुरुषार्थ) सँ पुरुष होइत अछि। खाली पुरुष योनि मे जन्म ल लेला सँ कियो पुरुष नहि बनि जाइत अछि। मिथिला नरेश योगेश्वर आ गणेश्वरक प्रशंसा एहि पुस्तक मे अछि। जौनपुर ख्याति बड़ छल। व्यापार–व्यवसाय समृद्ध छल। फारसी साहित्य मे जौनपुर के सिराज–ए–हिंद कहल गेल। राजा असलानक उल्लेख अछि। अंततः कीर्तिसिंह परास्त कयलनि। विद्यापति लिखने छथि– राजनीति मे हिंदू मुसलमान दुनू शासक के सहायता लय छलथि। कवि आ साहित्यकार विद्यापति कीर्तिलता मे कीर्ति सिंह आ अन्य राजनीतिक, सामाजिक आ आर्थिक पक्षक जानकारी दैत छथि ओ इतिहासकारो मानल जा सकैत छथि।

कीर्तिपताका :–

विद्यापति द्वारा लिखित ई पुस्तक अपना आप मे अद्भुत अछि। म. म. हर प्रसाद शास्त्री के ई पुस्तक नेपाल सँ प्राप्त भेल छल। ई अवहट्ठ भाषा मे लिखल गेल अछि। कतहु–कतहु संस्कृत शब्दक प्रयोग सेहो करल गेल अछि। एहि मे शिव सिंहक युद्धप्रियताक वर्णन अछि। यौवनक मद मे आनंद विभोर युवती सभक वर्णन अछि। ई पुस्तक श्रृंगार रस सँ भरल कहल जा सकैत अछि।

पुरुष परीक्षा :–

हिनक ई एक टा मूल्यवान कृति अछि। महाराज शिव सिंहक आदेश सँ विद्यापति एहि पुस्तकक रचना कयलनि। पुरुष परीक्षाक महत्त्व एहि सँ बुझल जा सकैत अछि जे ई पुस्तक फोर्ट विलियम कॉलेजक पाठ्यपुस्तक मे छल। अंग्रेजी, बंग्ला, मैथिली, हिंदी आदि भाषा मे पुस्तकक अनुवाद कयल गेल अछि। ग्रियर्सनक अंग्रेजी अनुवाद आइयो लोकप्रिय अछि। पुरुष परीक्षा मे मौर्य काल सँ लऽ कऽ ओइनवार वंशक राजा शिव सिंह तक के घटना के वर्णन अछि। नंद आ मौर्य शासकक कटुता, उज्जैनक शासक विक्रमादित्यक उल्लेख पुरुष परीक्षा मे कयल गेल अछि। विक्रमादित्य दानवीर बताओल गेल अछि आ महाराज भोजक समकालीन कर्णाट शासक मल्लदेवक उल्लेख पुरुष परीक्षा मे सेहो अछि। नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवक संबंध जयदेव सँ बताओल गेल अछि जे कनी विवादपूर्ण अछि। मोहम्मद गौरी आ नरसिंह देवक वर्णन, धार राजा भोज,

अलाउद्दीन खिलजीक सेहो वर्णन अछि। पुरुष परीक्षा साहित्यिक ग्रंथक रूप मे आ ऐतिहासिक ग्रंथक रूप मे सेहो उपयोग होइत अछि।

लिखनावली :–

विद्यापति द्वारा लिखित ई 84 पत्रक संकलन अछि। लिखनावली सँ तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्थाक बोध होइत अछि। सामंती व्यवस्था आ आर्थिक विफलता संबंधित पक्ष एहि पुस्तक मे अछि। समसामयिक, प्रशासनिक, सामाजिक आ आर्थिक पक्षक संदर्भ मे एकर महत्व अछि। पत्र लेखन कला त स्पष्ट होइते अछि।

गया–पत्तलक :–

एहि पुस्तक मे गया मे श्राद्ध संबंधी विधानक संक्षिप्त विवेचन कयल गेल अछि।

वर्ष कृत्य :–

एहि मे साल भरिक पावनिक विधान अछि। वर्ष कृत्यक रचना विद्यापति चंद्र सिंह रूपनारायणक आज्ञा सँ कयने छलाह। एकरा सँ तत्कालीन धार्मिक मान्यता के समझबाक–बुझबा मे सहायता मिलल। विवाह संबंधक महत्व पर सेहो प्रकाश देल गेल अछि। घर द्वार बनेबाक उपर्युक्त महीना आ महीनाक हिसाब सँ खयबाक–पीबाक निषेधक सेहो वर्णन अछि। सामाजिक आ सांस्कृतिक व्यवस्थाक लेल ई मूल्यवान पुस्तक अछि।

गोरक्ष विजय :–

ई एक टा नाटक छी। ई नाटक महराज शिव सिंहक आज्ञा सँ भगवान भैरवक आराधनाक लेल लिखल गेल अछि। गोरक्षनाथ आ मत्स्येंद्र नाथक प्रसिद्ध कथा पर आधारित अछि। मैथिली आ संस्कृत दुनू भाषाक प्रयोग एहि पुस्तक मे कयल गेल अछि।

मणि मंजरी :–

विद्यापति एहि नाटक मे राजा चंद्रसेन आ मणि मंजरीक प्रेम प्रसंगक वर्णन कयने छथि। मैथिली भाषा मे नाट्यशास्त्रक विकास के समझबाक–बुझबाक लेल ई पुस्तक बड़ उपयोगी अछि।

दुर्गा भक्ति तरंगिणी :–

एहि पुस्तक मे विद्यापति देवी दुर्गा सँ संबंधित आराधना सब बतौने छथि। महाराज भैरव सिंहक आदेश सँ एहि पुस्तकक रचना कयल गेल अछि। एहि ग्रंथ सँ ई बुझबा मे आबैत अछि जे विद्यापतिक समय मे दुर्गा पूजाक महत्त्व बड़ बेसी छल।

शैवसर्वस्वसार :–

संस्कृत भाषा मे ई ग्रंथ लिखल गेल अछि। एहि मे शिवक उपासना सँ संबंधित बात सब अछि। राजा पद्मसिंहक पत्नी विश्वास देवीक जिक्र एहि पुस्तक मे अछि। हिनके आदेश सँ विद्यापति एहि पुस्तकक रचना कयलनि। ईहो पुस्तक मे ओइवार वंशक किछु राजाक वर्णन भेटैत अछि। शिवक उपासनाक लेल विभिन्न प्रकार फल, फूल आ विभिन्न वस्तुक वर्णन सेहो भेटैत अछि। एकरा अतिरिक्त सामाजिक व्यवस्था सँ जुड़ल तथ्यक सेहो वर्णन अछि। सौ कन्याक उल्लेखसँ बहु विवाहक सेहो बोध होइत अछि।

विभागसार :–

विद्यापति द्वारा लिखित ईहो संस्कृत भाषा मे ग्रंथ अछि। ई ग्रंथ सामाजिक आ आर्थिक दृष्टि सँ महत्वपूर्ण अछि। संपत्तिक अधिकार, संपत्ति बटवारा, बटवारा मे बाप, बेटा, बेटी सभक अधिकारक उल्लेख कयल गेल अछि। मनु, नारद, वशिष्ठ, व्यास जेहन प्राचीन स्मृतिकारक उदाहरण दैत विद्यापति अपन बात कहने छथि।

दानवाक्यावली :– एहि पुस्तक मे विद्यापति दानक महत्व पर प्रकाश देने छथि। आइ धरि दान देबाक प्रथा बिहार मे लोकप्रिय अछि। एहि पुस्तक मे विद्यापति भारत देश के सेहो रेखांकित कयने छथि। एकरा लेल ओ मनु आ भविष्य पुराण के सेहो उद्धृत कयने छथि। खनिज संपदा पर सेहो बात कयने छथि। दान देबाक प्रक्रिया मे बहुमूल्य पत्थर आ रत्न सभक उल्लेख अछि।

गंगावाक्यावली :– एहि पुस्तकक रचना रानी विश्वास देवीक नाम सँ कियल गेल अछि। विद्यापतिक नाम संपादकक रूप मे अछि। एहि मे हरिद्वार सँ लऽ कऽ गंगासागर तक होइ बाला तीर्थक उल्लेख अछि। एहि मे रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृति आदिक उल्लेख विद्यापति कयने छथि। शिव शंकर ठाकुर लिखने छथि एकर रचना रानी विश्वास देवीक आज्ञा सँ विद्यापति कयने छलाह।

भू–परिक्रमा :–

संस्कृत मे लिखल गेल विद्यापतिक ई प्रथम पुस्तक छल। ई यात्रा–वृतांतक रूप मे महराजा देव सिंहक आदेश सँ लिखल गेल छल। एहि मे नगर आ ग्रामक वर्णन अछि। विद्यापति द्वारा लिखित भू–परिक्रमा एक टा यात्रा वृतांत अछि जे ओहि समयक आर्थिक इतिहासक उपयुक्त स्रोत मानल जा सकैत अछि।

विद्यापतिक रचना समसामयिक राजनीतिक व्यवस्थाक संदर्भ मे महत्वपूर्ण अछि। राजनीतिक चिंतन क्षेत्र मे विद्यापति अपनी पहिल राजनीतिक विश्लेषक चंडेश्वर सँ प्रभावित छलाह। विद्यापतिक राजनीतिक विचार पुरुष परीक्षा, लिखनावली, कीर्तिपताका आ विभागसार मे सेहो देखल जाइत अछि। हिनक राजनीतिक आदर्श ओइनवार वंशक नीति सँ प्रभावित छल। पुरुष परीक्षा मे राजा सभक काम–काज पर ध्यान दिऔने छथि। राजा के देव, नरदेव उपाधि सँ संबोधित कयने छथि। पुरुष परीक्षा मे विद्यापति राजा के उदार, करुणाशील आ सत्यनिष्ठ होयबाक सुझाव सेहो देने छथि। याज्ञवल्क्य जकाँ विद्यापति राजाक गतिविधि आ नीति के गुप्त रखबाक सलाह देन छथि।

पुरुष परीक्षाक पाँचम कथा मे लिखने छथि– मंत्री परिषद राजाक इच्छा पर काज करैत अछि तथापि ओकर भूमिका बड़ महत्वपूर्ण रहैत अछि। ओ कहै छथि जे ओ राज्य कखनो उन्नति नहि कऽ सकैत अछि जकर मंत्री विरक्त भऽ जाए। ओ कुछ मंत्री सभक चर्चा करै छथि जाहि मे अच्युत राजा शिव सिंहक मंत्री, रतिपति आ शंकर महत्वपूर्ण अधिकारी, राहत राजदेव एक सामंत अछि।

लिखनावलीक माध्यम सँ विद्यापति राज्यक अधिकारी बीच भेल पत्राचार सँ अवगत करबै छथि। प्रशासनक लेल अलग–अलग विभागक व्यवस्था छल जकरा कर्ण आ अधिकर्ण कहल जाइत छल। एहि मे सेनापति, दलपति, राउत जेहन सैनिक अधिकारीक सेहो उल्लेख अछि।

विद्यापति कवि कविये नहि अपितु एक टा राजनीतिक शिल्पकार सेहो छलाह। राजनीतिक दर्शन हुनक रचना मे स्पष्ट देखबा मे आबैत अछि। ई एक टा एहन पक्ष अछि जतय विद्यापति विद्वान कँ राजनीतिक चिंतक आ इतिहासकारक रूप मे प्रदर्शित करै छथि।

पदावली :–

विद्यापतिक प्रसिद्धक मूल आधार हुनक पदावली छनि। पदावलीक भाषा मैथिली अछि। हिनक गीतक प्रमुख विषय श्रृंगार आ भक्ति सँ जुड़ल रहै छलनि। भक्ति गीत मे मुख्यतः शक्ति, शिव आ गंगाक उपासना रहै छल। ई कहल गेल अछि पदावली खाली दू पांडुलिपि मिथिला क्षेत्र मे पाओल गेल छल। पहिल 18म शताब्दी मे रामभद्रपुरक पांडुलिपि जाहि मे 93 पद अछि। दोसर जे तरौनी (दरभंगा) मे पओल गेल। एहि मे 239 पदावली अछि। नगेंद्र नाथ गुप्त 1909 ई. मे बंगीय साहित्य सँ एकरा प्रकाशित करबौने छलाह। लोचन रागतरंगणी मे 51 गीतक संकलन करौने छलाह। मौखिक परंपराक आधार पर ग्रियर्सन 82 गीतक संकलन भणीताक रुप मे कयने छलाह। विद्यापतिक सभसँ प्रमाणिक गीत नेपाल दरबार पुस्तकालय मे मिलल छल। ई 16म आ 17म शताब्दी मे रचल गेल छल। एहि मे 288 गीत अछि।

विद्यापति पदावली बंगाल चयनिका मे सेहो पाओल गेल अछि। सर्वप्रथम विश्वनाथ चक्रवर्ती जे 18म शताब्दीक पहिल दशक मे संकलित कयलनि। ओ 315 गीत के अपन किताब कृष्ण भक्ति चिंतामणि मे कयने छलाह। दोसर चयनकर्त्ता राधा मोहन ठाकुर जे दीनबंधुक संस्कृतामृत नामक पांडुलिपि मे विद्यापतिक 165 पद के उपलब्ध करोलनि। कविवर रवींद्रनाथ टैगोर 1892 मे विद्यापतिराधिका मे विद्यापति पदावलीक उल्लेख कयलनि। विद्यापति द्वारा लिखल किछु गीत बंगाली स्रोत से सेहो प्राप्त भेल अछि।

विद्यापति के पदावली मे मिथिलाक कतेको राजाक जिक्र भेल अछि। राजा देव सिंह, महाराजा हरि सिंह, शिव सिंह, पद्म सिंह, रानी विश्वास देवी, राधव सिंह, रूद्र सिंह, धरि सिंह, भौरव सिंह आ राजा चंद्र सिंहक वर्णन अछि।

महाकवि विद्यापति अपनी मातृभाषा मैथिली मे असंख्य पदक रचना कयलनि। पदावलीक लोकप्रियता कारणे ओ 'अभिनव जयदेव', 'मैथिल कोकिल' आदि नाम सँ जानल गेलाह। विद्यापतिक पद मिथिला, नेपाल, बंगाल, उड़ीसा आ असम मे मिलल अछि। मिथिलाक्षर मे लिखल विद्यापतिक गीत हस्तलेख रूप मे नेपाल दरबार लाइब्रेरी, काठमांडू मे सुरक्षित अछि। सबसँ पहिले म. म. हर प्रसाद शास्त्री एकर खोज केलाह आ नेपाल सरकारक अनुमति सँ नागेंद्र नाथ एकर उपयोग कयलाह। एहि मे 287 पद अछि। पुनः नेपाल सँ प्राप्त भाषा गीत संग्रहक अंतर्गत विद्यापतिक 68 गीत भेटल।

बंगाली स्रोत सँ सेहो विद्यापतिक पद भेटल छनि। वैष्णव संत विश्वनाथ चक्रवर्ती 18म शताब्दी मे 315 पद के संकलित कयलनि अछि जाहि मे 37 टा पद भणिता वाला अछि।

पंडित राधा मोहन ठाकुर वैष्णव कवि के 746 पद संकलित कयलनि जाहि मे 64 पद भणिता सँ अछि। पद कल्पतरु (चारि भाग मे) वैष्णव कविक 3101 पद अछि जाहि मे 161 पद भाणिता सँ अछि। एहि परंपरा के अंतर्गत कतेको विद्वान स्वतंत्र रूप सँ बंगाल मे प्राप्त विद्यापतिक पदावली के संकलित कयलनि जाहि मे नगेंद्र नाथ गुप्त, खगेंद्र नाथ मिश्र, विमान बिहारी मजूमदार, मोहम्मद शहीदुल्लाह आदि प्रमुख छथि।

एहि सभ हस्तलिखित लेखक अतिरिक्त मिथिला आ बंगाल लोक गीत के रूप मे विद्यापति के गीत उपलब्ध अछि। 1881–82 मे ग्रियर्सन एशियाटिक सोसाइटी सँ एहन गीत के प्रकाशित करौलनि। विद्यापति के कतेको गीत के बंग्ला भाषा सँ अन्य भाषा मे अनुवाद भेल अछि।

हिनक पदावली भक्ति आ श्रृंगार दुनू सँ भरल अछि। विद्यापति के वैष्णव कविक रूप मे स्वीकार कयल गेल अछि। चैतन्य प्रभु हिनका सँ प्रभावित छलाह। डॉ. उमेश मिश्र आ नगेंद्र नाथ दासक अनुसार विद्यापति त्रिदेवोपासक छलाह कियाक तऽ हुनक रचना शक्ति, विष्णु आ शिव तीनू मे मिलल अछि। किछु विद्वान हुनका मूलतः शैव मानैत छथि। वस्तुतः हिनक पदावली कतेको

अर्थ मे महत्वपूर्ण अछि। हिनक महेश वाणी, नचारी, उचिती, योग एहि सभ गीत मे मिथिलाक सामाजिक जीवनक बड़ सुंदर, सत्य आ मार्मिक वर्णन अछि। समाजक सभ सँ गरीब लोकक अवस्थाक चित्रण विद्यापतिक 'नचारी' मे भेटैत अछि।

टुटले फुटले मड़ैया अधिक सोहाओन हे।

ताहि पर बैसल गौर मनहि मन झाँखत हे।।

एहन कतेको पद मे विद्यापति निर्धनक जीवन के देखबैत छथि। उदाहरण रूपे स्वयं शिव सँ पार्वती कहै छथिन खेती–बाड़ी शुरू करू। जखन तक अनाज नहि उपजत तब कत भीख मांगऽ पड़त जखन कि भीख मंगनाय निकृष्ट काज अछि।

विद्यापतिक कविता वस्तुतः समाजक दर्पण अछिं विद्यापति के रचना सँ मिथिलाक महिलाक तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के सेहो बोध होइत अछि। अनमेल बियाह विद्यापति के पसंद नहि छल। ओ लिखैत छथि :–

पिया लेलि गोद कए चलति बाजार।

हटियाक लोक पूछए के लागू तेहार।।

विद्यापति के पदावली सँ वस्त्र, परिधान, आभूषण सभक बोध होइत अछि। शृंगारक लेल फूलक प्रयोग भेल अछि। हिनक पदावली मे सुहागिनक परिधानक सेहो चर्चा अछि। सिंदूर, आभूषण, विभिन्न प्रकार चूड़ी, बाहुमूल्य रत्न सभक प्रयोग अछि। पर्दा प्रथाक लेल घुंघट सेहो प्रयोग अछि। बियाह एक टा महत्वपूर्ण संस्कार अछि। हिनक गीत मे बियाहक रीति रिवाज भरल अछि। सोहाग, परीक्षण, बेदी, कोहबर आदि शब्दक व्यापक प्रयोग कयल गेल अछि।

हिनक कविता मे सूक्ति सभक खूब नीक उपयोग अछि। विद्यापति संसार मे मनुष्य जन्म के अपूर्व मानैत छथि।

'भनहि विद्यापति रूप, हे सखी मानुष जन्म अनूप'

विद्यापति जन्मे के सफल नहि मानैत छथि। सबसँ श्रेष्ठ ओ मनुष्य अछि जे अपन वचनक प्रतिपालन करय। 'सुपुरुष वचन परवापक रेहा' विद्यापति पति के स्त्रीक एक मात्र सर्वस्व मानै छथि। दांपत्यक संबंध के पवित्र आ संपूर्ण मानै छथि। विद्यापति अपन गीत के संकलन नहि कयलनि। मुदा बिहार, बंगाल, आसाम, नेपाल आ उड़ीसा मे हुनक पसरल गीत अमर बना देलकनि। विद्यापतिक पदावली गेय (गाबै) वला अछि जेकरा के संस्कृत अलंकार शास्त्र मे भद्र काव्य कहल जाइत अछि। विद्यापति अपन गीत मे जाहि रागक प्रयोग कयलाह ओ बौद्ध सिद्ध द्वारा जयदेवक 'गीत गोविंद', ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मे उल्लेखित अछि अर्थात कही सकैत छी विद्यापति एहि सब राग सँ प्रभावित छलाह। हिनक शृंगार रचना कालीदास सँ प्रभावित देखबा मे आबैत अछि। उपमा अलंकार सब मे समानता अछि। विद्यापति शृंगार प्रधान गीत भौतिक प्रेम सँ युक्त स्त्री–पुरुष संबंध पर केंद्रित अछि। ग्रियर्सनक दृष्टि सँ ई गीत कबीरक गीतक तरहे रहस्यात्मक अछि जाहि मे प्रेमक माध्यम सँ आत्मा के परमात्मा में विलीन होयबाक बात कहल गेल अछि। वस्तुतः विद्यापति के शब्द चित्रकार मानल गेल अछि। सौंदर्यक आकलन में प्रेम प्रमुख विषय रहै छनि जकरा सदैव महिलाक दृष्टि सँ देखैत छथि।

रवीन्द्रनाथ टैगोर विद्यापतिक काव्यक मूल्यांकन करैत स्वीकार केने छथि जे विद्यापति आनंद आ प्रेमिका मिलनक आनंद कवि छथि। विद्यापति प्रकृति प्रेमी सेहो छलाह। हिनक ऋतु वर्णन परंपरागते नहि अपितु वास्तविक अछि। विद्यापति अपनो लेल अनेक उपाधिक प्रयोग केने छथि जेना– सरस कवि, कविराज, सुकवि, कविवर आदि।

अभिनव जयदेव बंगाल मे एतेक लोकप्रिय छलाह जे बहुतो दिन तक बंगाली कवि मानल जाइत छलाह। चैतन्य, चंडीदास, ज्ञानदास, राधामोहन, टैगोर, अरविंद सब विद्यापति सँ प्रभावित छलाह। आसाम मे विद्यापति वैष्णव संतक रूप मे मशहूर दलाह। शंकरदेव (1449–1568) आसाम मे विद्यापति के लोकप्रिय बनौलनिं बंगालक माध्यम सँ उड़ीसा मे सेहो विद्यापतिक

प्रभाव देखल जा सकैत अछि। उड़ीसाक प्रख्यात नाटककार रामानंद राय विद्यापति सँ प्रभावित छलाह। उड़ीसाक राय दामोदरदास, चंडकवि आ यदुपति दास विद्यापति सँ प्रभावित देखबा मे आबैत छथि।

नेपाल मे मैथिली आइ धरि सशक्त भाषा अछि। नेपालो मे विद्यापति बड़ लोकप्रिय छलाह। नेपाल दरबार मे मैथिली भाषा के सम्मानित स्थान मिलल। विद्यापति मध्यकालीन राजनीति आ सामाजिक व्यवस्थाक चुनौती के ध्यान मे राखि नियम–परिनियमक मध्यमे मध्ययुगीन सामाजिक व्यवस्था के सुदृढ़ करबो प्रयत्न कयलनि। विद्यापति संगीतकार आ नाटककार दुनू छलाह। उमापति आ लोचन संगीत आ नाटकक क्षेत्र मे हिनका सँ प्रभावित दलाह। विद्यापति जाहि नाट्य परंपराक विकास कयलाह ओ आसाम आ नेपाल जेहन क्षेत्र मे खूब लोकप्रिय भेल। विद्यापति पदावली विद्यापति के अमर बनौलक। मिथिलाक लोक संस्कृति मे आइयो एकर व्यापक महत्व अछि। हुनक गीत बिना कोनो अनुष्ठान पूर्ण होयबाक कल्पनो नहि भ सकैत अछि।

अर्थात कहि सकै छी जे विद्यापति आमजनक मसीहा छलाह। हिनक क्षेत्र राजदरबार सँ निकैल खेत खरिहान तक पहुँच जाइत अछि। हिनक रचना मे अरबी–फारसी शब्दो के प्रयोग भेल अछि। हिनक रचना नचारी अब्दुल फजल के सेहो प्रभावित कने छल जेकर चर्चा फजल आइन–ए–अकबरी मेकेने छथि। अपन समय मे विद्यापति समस्त भारत मे महत्वपूर्ण स्थान रखैत छलाह। निःसंदेह कही सकै छी विद्यापतिक बहुआयामी व्यक्तित्व मिथिला आ बिहारक इतिहास मे एक टा गौरवपूर्ण अध्याय छल।

संदर्भ सूची

1. पुरुष परीक्षा– हेतुकर झा – 2022
2. सम आस्पेक्ट ऑफ सोसायटी एंड इकोनोमी ऑफ मीडियम मिथिला
3. विद्यापतिकालीन मिथिला – पटना 1986
4. कंप्रीहेसिव हिस्ट्री ऑफ बिहार– पटना 1983
5. हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर – साहित्य अकादमी 1976
6. बिहार थ्रू द एजेज – कोलकाता 1959
7. मिथिला तत्त्व विमर्श – मिथिला अकादमी
8. द सॉन्ग ऑफ विद्यापति – सुभद्र झा 1954
9. मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति– वाराणसी 1876
10. मैथिली साहित्यक इतिहास
11. कीर्तिलता – वाराणसी 1964
12. हिस्ट्री ऑफ तिरहुत – कोलकाता 1922